SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

रामगढ़ जिले के पतरातू बांध पर्यटन स्थल का मानव जीवन स्तर पर प्रभावः एक भौगोलिक विश्लेषण

संजय कुमार दाँगी, शोधार्थी, भूगोल विभाग
के. बी. महिला महाविद्यालय, हजारीबाग, झारखण्ड, भारत
रंजीत कुमार दास, पीएच–डी, शोध निदेशक, स्नातकोत्तर भूगोल विभाग
मार्खम कॉलेज ऑफ कॉमर्स, हजारीबाग, झारखण्ड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
संजय कुमार दाँगी, शोधार्थी
रंजीत कुमार दास, पीएच–डी, शोध निदेशक
E-mail : sanjaykrdharli@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 14/01/2026
Revised on : 18/03/2026
Accepted on : 27/03/2026
Overall Similarity : 00% on 19/03/2026

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment
0%
Overall Similarity

Date: Mar 19, 2026 (03:33 PM)
Matches: 0 / 3486 words
Sources: 0

Remarks: No similarity found, your document looks healthy.

Verify Report: Scan this QR Code

शोध सार

मानव एक भ्रमणशील प्राणी है। मानव जीवन में पर्यटन की जिज्ञासा उसके अस्तित्व काल से मानी जाती है, तथा मानव के सम्पूर्ण विकास में पर्यटन की अहम भूमिका होती है। आज के वर्तमान समय मे लोगों के रोजमर्रा के कार्यो से मानसिक तनाव दूर करने का सर्वोतम साधन पर्यटन को माना जाता है। अध्ययन क्षेत्र में भौगोलिक पर्यटन, धार्मिक पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन तथा ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों की उपलब्धता होने के कारण इस शोध पत्र के माध्यम से शिक्षा, ब्यवहारिकता ,भावनात्मकता, सामाजिक एवं सांस्कृतिक ज्ञान तथा आर्थिक विकास पर विशेष ध्यान आकर्षित किया जा सकता है। इन सभी को ध्यान मे रख कर अध्ययन का प्रयास किया गया है,जो क्षेत्र के विकाश में सहायक साबित हो सके।

मुख्य शब्द

पर्यटन क्षेत्र, पर्यटक, परिवहन, जनसंख्या, पर्यटन नितियाँ, साक्षरता.

परिचय

पर्यटन दो शब्दों से मिलकर बना है परि+अटन। 'परि' का अर्थ चारो ओर तथा 'अटन' का अर्थ 'गति' होता है। Tourism नामक शब्द अंग्रेजी शब्द 'Tour' से बना है। यह लैटिन भाषा का शब्द है। इस भाषा में Tornos से यात्रा चक्र का विचार उत्पन्न हुआ है जो कि आधुनिक पर्यटन का मुख्य आधार माना जाता है।

Toyar शब्द हिब्रु (Hibrew) भाषा का शब्द है और हिब्रु को ज्वती शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ अध्ययन या खोज से है।

वस्तुतः पर्यटन शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम संभवतः 19वीं शताब्दी में किया गया होगा, परन्तु इसका इतिहास बहुत ही प्राचीन है। प्राचीन काल में भारत, यूनान, रोम के लोग अपने आस–पास के क्षेत्रों में यात्रा किये होंगे। जिसका साक्ष्य पुरातात्विक प्रमाणों के आधार पर कहा जा सकता है। भारत की हड़प्पा सभ्यता जो विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यता मानी जाती है, पहिया और मुद्रा पर्यटन के दो मूल महत्वपूर्ण साधनों का विकास हो चुका था, सिन्धु घाटी में तांबे के मिले पहियेदार इक्के तथा अंकित चिन्ह के ठिकड़ों, जिन्हें कुछ विद्वान विनिमय का माध्यम मानते है, इसके जीवन्त प्रमाण है।

यूनिवर्सल शब्दकोश के अनुसार "पर्यटक वह व्यक्ति है जो मनोरंजन तथा जानकारी हासिल करने के लिए यात्रा करता है ताकि दूसरे व्यक्तियों को अपनी यात्रा का पूरा वर्णन दे सके।"

एल. जे. लिकोरिश के अनुसार "वे समस्त व्यक्ति जो एक माह से अधिक तथा 24 घण्टे से कम की अवधि के लिए किसी स्थान पर ठहरते हैं, यात्राओं की श्रेणी में नहीं आते हैं।"

झारखण्ड राज्य के रामगढ़ जिले में पर्यटन की वर्तमान स्थिति

झारखण्ड भारत का एक महत्वपूर्ण खनिज संपदा से भरापूरा प्रदेश है जो प्राकृतिक सौन्दर्य, धार्मिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक रूप से परिपूर्ण है। यहाँ जंगल, पहाड़, पठार, नदी, झरनें खूबसूरत घाटियाँ इत्यादि पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है साथ–साथ आदिवासी बहुल क्षेत्र होने के कारण उनकी जीवन शैली रीति–रिवाज एवं क्रिया–कलापों का मनमोहक परिदृश्य देखने को मिलता है।

पर्यटन का महत्त्व

भारत की सांस्कृतिक धरोहर में पर्यटन व यात्रा की अवधारणा बहुत पुरानी रही है। संस्कृत साहित्य में पर्यटन में तीन शब्दों का प्रयोग किया गया है, जो कि एक ही उत्पत्ति 'पर्यटन' से हुआ है, जिसका अर्थ है अल्प समय के लिए घर को छोड़ना। ये तीनों शब्द है:

- **पर्यटन:** आनन्द प्राप्ति तथा ज्ञानार्जन के लिए घर से बाहर निकलना।
- **देशाटन:** आर्थिक लाभ व रोजगार के लिए देश से बाहर जाना।
- **तीर्थाटन:** धार्मिक महत्व के लिए स्थानों का भ्रमण करना।

United Nation ने 1945 में The League of National द्वारा बताई गई पर्यटक की परिभाषा को निश्चित किया तथा पर्यटक की परिभाषा दी कि ''पर्यटक वे लोग होते हैं जो अन्य देश में 24 घंटे से अधिक तथा 6 महिने से कम निवास करते हैं।'' विश्व पर्यटन संगठन (W.T.O) के अनुसार पर्यटन का अर्थ जब लोग 24 घण्टे से अधिक और 1 वर्ष से कम समय की अवधि के लिए अपने कार्यस्थल से बाहर निकलते हैं।

साहित्य समीक्षा

रामगढ़ झारखण्ड का सबसे छोटा एवं खनिजों से भरा जिला है। यह दामोदर नदी के किनारे बसे जिला में कोयला प्रचूर मात्रा में पाया जाता है। जिले का पूरा भाग चट्टानों ऊँचे–नीचे क्षेत्रों एवं वनस्पतियों, पहाड़ो, नदियों के भ्रंश घाटी तथा प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ–साथ पर्यटन के असीम सम्भावनाएँ को प्रकट करती है। शोध कार्य को करने से पहले संबंधित शोध विषय पर साहित्य समीक्षा का होना महत्वपूर्ण कार्य होता है।

बंसल, आर. सी. (2013) के द्वारा लिखित पुस्तक 'पर्यटन भूगोल एवं यात्रा–प्रबंधन' में इन्होंने भारत के स्तर में पर्यटन की असीम संभावनाओं का उल्लेख किया जिसमें पर्यटन के ऐतिहासिक विकास महत्व एवं भारत के धार्मिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक पर्यटन स्थलों के बारे में संक्षिप्त जानकारियाँ प्रस्तुत किया।

प्रसाद, कमला, सरकार, पी.(2014) ने अपनी पुस्तक "टूरिज्म इन झारखंड" में झारखंड के पर्यटन क्षेत्र एवं संभावनाएँ, विकास के स्तर, भविष्य में पर्यटन के नियोजन आदि पर प्रकाश डाला गया है।

अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन क्षेत्र रामगढ़ जिला भारत देश के झारखण्ड राज्य अन्तर्गत 24 वाँ जिला है इसकी स्थापना 12 सितम्बर 2007 को हुई, रामगढ़ जिला झारखंड राज्य के 24 जिलों में से एक है। रामगढ़ जिला का अक्षांशीय स्थिति 2300′38″ से 23055′0″ उत्तर एवं 8500′34″ से 85045′0″ पूर्वी देशांतर के मध्य लगभग 1360.08 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल पर विस्तृतसे 85045′0″ पूर्वी देशांतर के मध्य लगभग 1360.08 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल पर विस्तृत है। रामगढ़ जिला के प्रसाशनिक 6 प्रखण्ड है रामगढ़, दुलमी, गोला, माण्डू, पतरातू, चितरपुर इसका चौहदि– उत्तर में– हजारीबाग, दक्षिण में– रांची, पूर्व में– बोकारो एवं पुरूलिया, पश्चिम में–रांची की सिमाऐं स्थित हैं। अध्ययन क्षेत्र रामगढ़ जिला स्थित पतरातू प्रखण्ड का पतरातू डैम है।

चित्र 1: अध्ययन क्षेत्र का स्थान मानचित्र

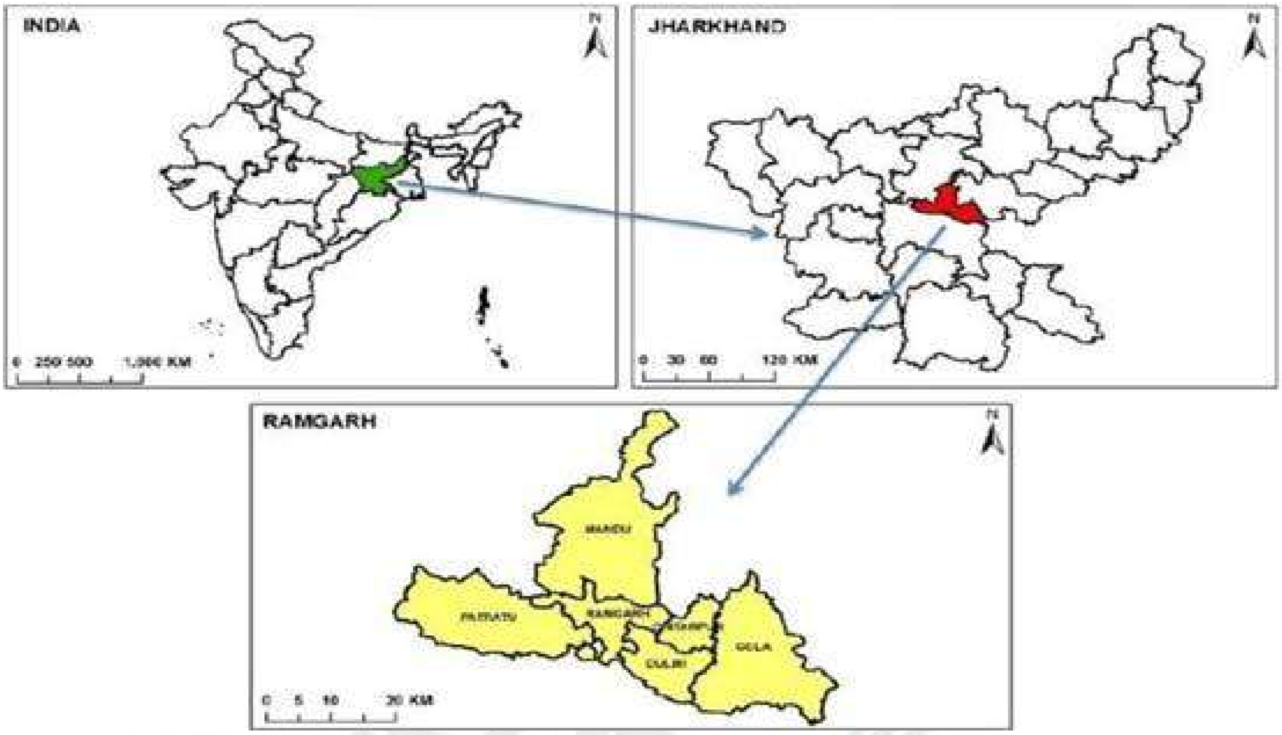

(स्त्रोतः *Survey of India and JTDC*)

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्न हैः

- पतरातू डैम में पर्यटन के वर्तमान स्वरूपों का अध्ययन करना।
- पर्यटन को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करना।
- पर्यटन स्थल का विकास के संभावनाओं का पता लगाना।
- मानव जीवन स्तर पर पर्यटन के प्रभावों का अध्ययन करना।
- पर्यटन विकास का नियोजन एवं संभावना हेतु सुझाव।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध कार्य में विधि–तंत्र आवश्यक होता है विधि तंत्र का उपयोग करके शोध कार्य को वैज्ञानिक बनाया जा सकता है। इस शोध कार्य को पूरा करने के निम्नलिखित विधि तंत्र उपयोग किया गया हैः

1. **प्राथमिक आँकड़ाः** अवलोकन, साक्षात्कार, प्रश्नावली, अनुसूची आदि।

2. **द्वितीयक आँकड़ाः** पर्यटन विभाग भारत सरकार एवं पर्यटन विभाग झारखण्ड सरकार के पर्यटन नीति, रामगढ़ जिला गजट, जिला जनगणना हैण्डबुक, शोध कार्य से संबंधित पुस्तकें, शोध आलेख–पत्र, अखबार, पत्र–पत्रिकाएँ।

पतरातू बांध का परिचय

पतरातू बांध झारखंड के रामगढ़ जिले में स्थित एक खूबसूरत पर्यटन स्थल है। यह बांध नलकारी नदी पर बना है और इसका निर्माण 1960 में पतरातू थर्मल पावर स्टेशन (पीटीपीएस) को पानी की आपूर्ति के लिए किया गया था। इस बांध की योजना महान भारतीय इंजीनियर सर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया के मार्गदर्शन में तैयार की गई थी लेकिन आज यह अपनी प्राकृतिक सुंदरता, साहसिक गतिविधियों और शांत वातावरण के कारण पर्यटकों को आकर्षित करता है।

झारखंड राज्य के रामगढ़ जिले में स्थित पतरातू बांध अपनी खूबसूरती के कारण सालों भर पर्यटकों को आकर्षित करता है। यहां हर दिन हजारों पर्यटक आते हैं। डैम के गेट के ठीक नीचे एक प्राचीन शिव मंदिर और पंचवाहिनी मंदिर है। पतरातू डैम को नलकर्णी डैम के नाम से भी जाना जाता है। यहां का मुख्य आकर्षण तीन तरफ से बांध को घेरने वाली पहाड़ियों पर बनी सर्पीली पगडंडियों के कारण सुंदर दृश्य प्रस्तुत करता है। पतरातू बांध झारखंड की राजधानी रांची से लगभग 40 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह बांध नलकारी नदी पर बना है। घने जंगलों, पहाड़ियों और टेढ़े–मेढ़े रास्तों (पतरातू घाटी) से होकर यहाँ पहुँचना अपने आप में एक रोमांचक अनुभव है। पतरातू घाटी (टंससमल) बांध तक पहुँचने वाला रास्ता अपनी घुमावदार सड़कों के लिए प्रसिद्ध है, जिसे अक्सर ''झारखंड का ऊटी'' कहा जाता है।

चित्र 2

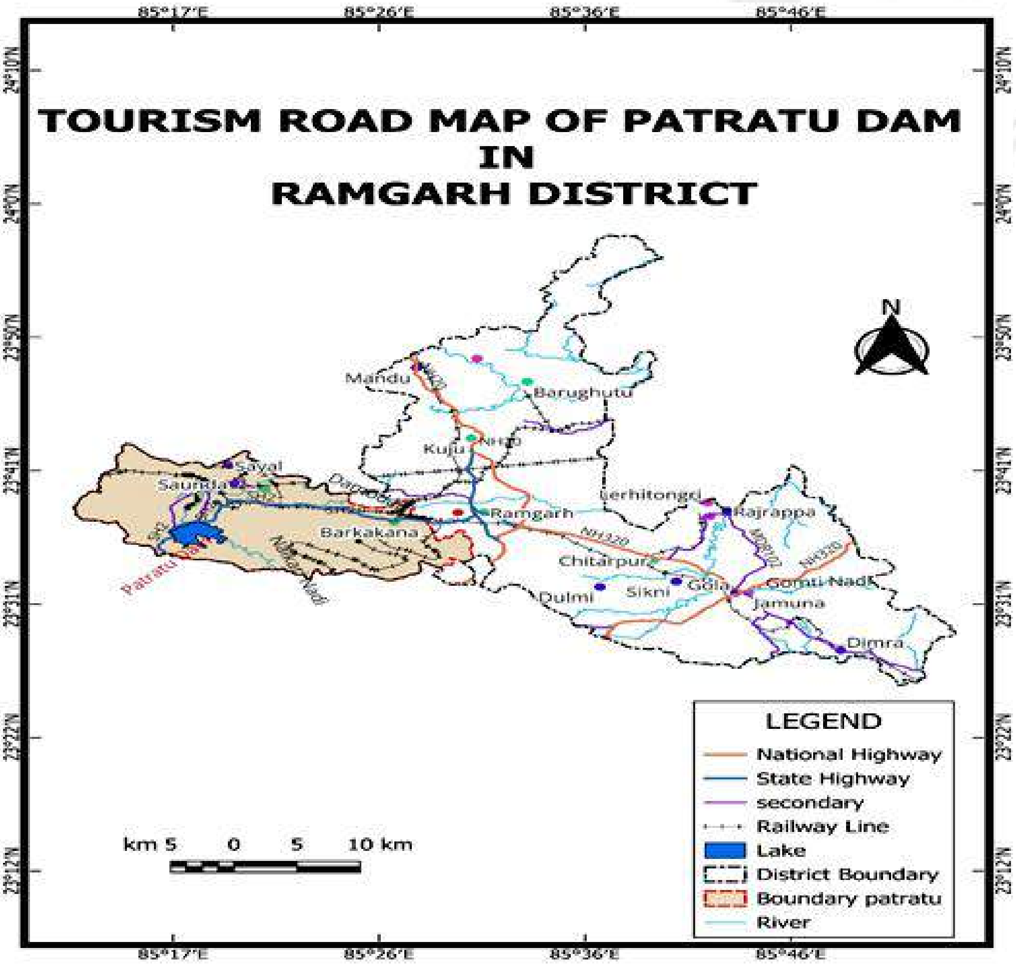

*(**Source:** Survey of India and JTDC)*

पतरातू बांध की भौगोलिक स्थिति

पतरातू डैम का कुल क्षेत्रफल 2727 एकड़ में फैला हुआ है। इसमें खेती और पहाड़ी क्षेत्र शामिल हैं जिसका उपयोग डैम के निर्माण में किया गया है। इस डैम की जल क्षमता 1332 रेडियस लेवल है। गहराई की बात करें तो पतरातू डैम की गहराई करीब 110 फीट (33.528 मीटर) बताई जाती है। बांध के चारों ओर बिजली की लाइटें लगाई गई हैं। शाम होते ही सभी लाइटें जला दी जाती हैं। एक विशाल गेट है जिसके माध्यम से बांध से अतिरिक्त पानी छोड़ा जाता है।

चित्र 3

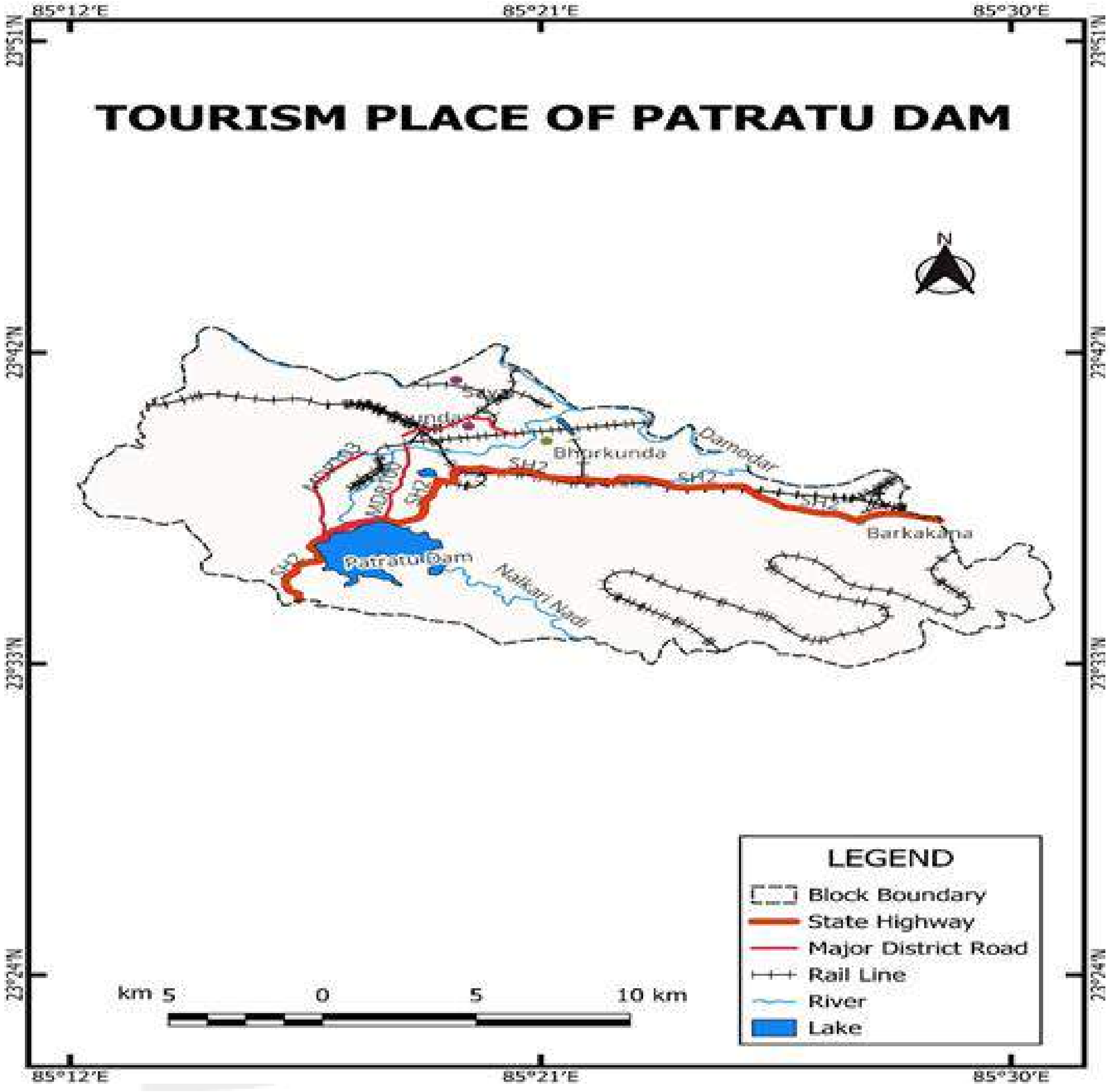

*(**Source:** Survey of India and JTDC)*

पतरातू बांध में करने योग्य गतिविधियाँ

यहां मनोरंजन का मुख्य साधन बोटिंग माना जा सकता है। यहां बोटिंग के कई प्रकार देखने को मिलते हैं। जैसे पार्टी, शादी, मनोरंजन, शोक मनाने, मछली पकड़ने के लिए बोटिंग की सेवा ली जा सकती है।

- **साइकिल बोटिंग:** यह एक तीन पहियों वाली नाव है जो रिक्शा की तरह दिखती है जिसमें एक या दो लोग बैठकर बांध के थोड़ी दूर तक चप्पू चलाकर नाव चला सकते हैं।

- **क्रश बोटिंगः** यह एक विशाल क्रूज है, जिसमें कई पर्यटक एक साथ बोटिंग का आनंद ले सकते हैं जिसमें लगभग 40 से 80 लोग एक साथ सवारी कर सकते हैं।
- **मछली पकड़नाः** बांध के अंदर और किनारे पर बोटिंग के माध्यम से मछलियाँ पकड़ी जाती हैं जिसमें विशेष रूप से स्थानीय लोग मछली पकड़ते हैं।
- **एडवेंचर पार्कः** यह एडवेंचर के लिए सबसे अच्छी जगह है। जहाँ कई तरह के खेलों की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। यहाँ वयस्कों और बच्चों के लिए एडवेंचर के उपकरण मौजूद हैं।
- **हंस के आकार की पैडल बोटः** यह सुविधा बांध गेट के नीचे पंचवाहिनी मंदिर के पास उपलब्ध है। 4 लोग एक साथ पैडल और बोट चला सकते हैं।
- **पिकनिकः** जनवरी के महीने में आस–पास और दूर–दराज के शहरों से पर्यटक यहाँ पिकनिक का आनंद लेने आते हैं। यहाँ सभी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यहाँ के रिसॉर्ट में भी सभी सुविधाएँ उपलब्ध हैं।
- **फोटोग्राफीः** यहां कई खूबसूरत जगहें हैं, जहां अच्छी तस्वीरें क्लिक की जा सकती हैं। यहां पक्षियों की कई प्रजातियां देखी जा सकती हैं।

पतरातू बांध में पर्यटकों का वर्षवार आगमन

वर्ष	अन्तराष्ट्रीय पर्यटक	राष्ट्रीय पर्यटक	राजकीय पर्यटक
2015	1200	32000	85000
2016	1350	35500	92000
2017	1500	38000	98000
2018	1750	42000	105000
2019	2000	48000	118000
2020	700	18000	40000
2021	900	25000	60000
2022	1800	55000	125000
2023	2200	62000	140000
2024	2600	70000	155000

(स्त्रोतः JTDC क्षेत्रीय पर्यटन रिपोर्ट)

चित्र 3: पतरातू बांध में पर्यटकों का वर्षवार आगमन

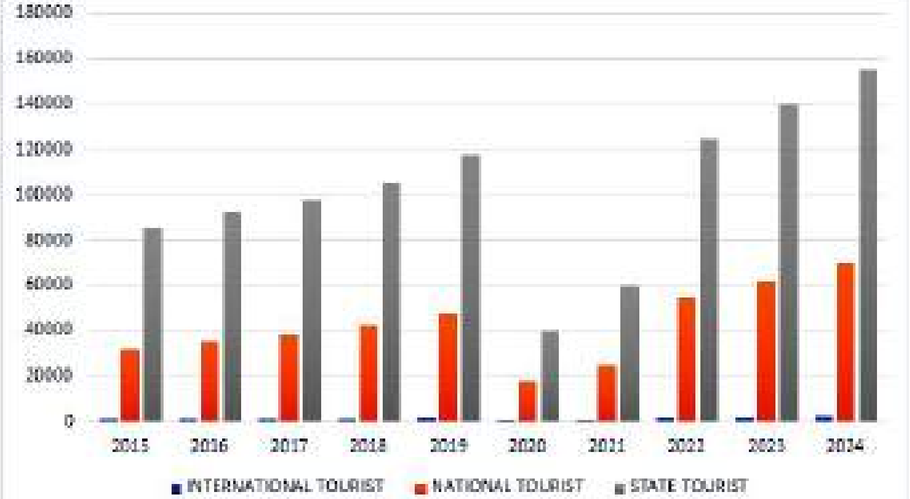

(स्त्रोतः JTDC क्षेत्रीय पर्यटन रिपोर्ट)

पतरातु बांध के उद्देश्य

पतरातु बाँध झारखंड राज्य के रामगढ़ जिले में स्थित एक महत्वपूर्ण जल संसाधन परियोजना है। इसका निर्माण मुख्यतः पतरातु ताप विद्युत स्टेशन (Patratu Thermal Power Station) तथा आसपास के क्षेत्रों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया गया था। इसके निर्माण के कई प्रमुख उद्देश्य हैं, जिनका विवरण निम्नलिखित है:

1. **विद्युत उत्पादन के लिए जल आपूर्ति:** पतरातु बाँध का मुख्य उद्देश्य पतरातु ताप विद्युत स्टेशन को निरंतर जल उपलब्ध कराना है। बिजली उत्पादन में पानी का उपयोग बॉयलर को ठंडा करने और अन्य औद्योगिक प्रक्रियाओं में किया जाता है इसलिए यह बाँध विद्युत उत्पादन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।
2. **सिंचाई की सुविधा:** बाँध से आसपास के कृषि क्षेत्रों को सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध कराया जाता है। इससे किसानों को वर्षा पर निर्भर नहीं रहना पड़ता और फसलों की उत्पादकता में वृद्धि होती है।
3. **पेयजल की आपूर्ति:** पतरातु बाँध का पानी आसपास के कस्बों और गांवों में पेयजल के रूप में भी उपयोग किया जाता है। इससे स्थानीय लोगों की जल आवश्यकता की पूर्ति होती है।
4. **पर्यटन का विकास:** पतरातु बाँध और इसके आसपास की पतरातु घाटी प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर है। यहाँ हर वर्ष बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं। इससे स्थानीय स्तर पर पर्यटन उद्योग का विकास होता है और लोगों को रोजगार के अवसर मिलते हैं।
5. **पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखना:** बाँध के कारण आसपास के क्षेत्र में जल स्तर बना रहता है, जिससे वनस्पति और जीव–जंतुओं के लिए अनुकूल वातावरण तैयार होता है। यह स्थानीय पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में भी सहायक है।
6. **मत्स्य पालन का विकास:** बाँध के जलाशय में मछली पालन भी किया जाता है, जिससे स्थानीय लोगों को अतिरिक्त आय का स्रोत मिलता है।

पतरातु बांध के निर्माण से मानव जीवन स्तर में महत्वपूर्ण परिवर्तन

ये परिवर्तन आर्थिक, सामाजिक, पर्यावरणीय तथा पर्यटन से जुड़े हुए हैं। इसका विवरण निम्न प्रकार है:

1. **आर्थिक स्तर में सुधार:** पतरातु बाँध बनने से क्षेत्र में सिंचाई की सुविधा बढ़ी, जिससे किसानों की कृषि उत्पादन क्षमता में वृद्धि हुई। मछली पालन (मत्स्य पालन) के अवसर बढ़े, जिससे स्थानीय लोगों की आय के नए स्रोत बने। पर्यटन के विकास से होटल, दुकान, नाव सेवा, वाहन सेवा आदि व्यवसाय बढ़े, जिससे रोजगार के अवसर बढ़े।
2. **रोजगार के अवसर:** बाँध के निर्माण और उसके बाद पर्यटन विकास से स्थानीय लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार मिला। नाविक, गाइड, होटल कर्मचारी, दुकानदार आदि कई तरह के रोजगार विकसित हुए।
3. **जीवन स्तर में सुधार:** क्षेत्र में आय बढ़ने से लोगों की शिक्षा, स्वास्थ्य और जीवन सुविधाओं में सुधार हुआ। सड़क, बिजली और संचार जैसी मूलभूत सुविधाओं का विकास हुआ।
4. **सामाजिक परिवर्तन:** पर्यटन के कारण बाहरी लोगों के संपर्क से स्थानीय संस्कृति और समाज में जागरूकता बढ़ी। लोगों में शिक्षा और आधुनिक जीवन शैली के प्रति रुचि बढ़ी।
5. **पर्यावरणीय प्रभाव:** बाँध के आसपास हरियाली और जल संसाधन बढ़े, जिससे स्थानीय जलवायु पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। हालांकि कुछ क्षेत्रों में भूमि डूब क्षेत्र बनने से कुछ लोगों का विस्थापन भी हुआ। इस प्रकार पतरातु बाँध ने क्षेत्र के मानव जीवन स्तर को आर्थिक, सामाजिक और पर्यटन विकास के माध्यम से बेहतर बनाया है, हालांकि इसके साथ कुछ चुनौतियाँ जैसे विस्थापन और पर्यावरणीय बदलाव भी देखने को मिले हैं।

पतरातु बांध का मानव जीवन पर सकारात्मक प्रभाव

1. **जल की उपलब्धता:** पतरातु बाँध के निर्माण से क्षेत्र में वर्ष भर पानी की उपलब्धता बनी रहती है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल और घरेलू उपयोग के लिए पानी आसानी से मिल जाता है।
2. **सिंचाई की सुविधा:** इस बाँध के कारण आसपास के कृषि क्षेत्रों को सिंचाई के लिए पर्याप्त पानी मिलता है, जिससे फसलों की उत्पादन क्षमता बढ़ी किसान दो से तीन फसलें उगाने लगे कृषि पर निर्भर लोगों की आय में वृद्धि हुई।
3. **मत्स्य पालन का विकास:** बाँध के जलाशय में मछली पालन का विकास हुआ है। इससे स्थानीय लोगों को रोजगार मिला तथा उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ।
4. **पर्यटन का विकास:** पतरातु बाँध और पतरातु घाटी की प्राकृतिक सुंदरता के कारण यह एक प्रमुख पर्यटन स्थल बन गया है। पर्यटकों की संख्या बढ़ने से स्थानीय व्यापार, होटल, रेस्टोरेंट और परिवहन सेवाओं का विकास हुआ। स्थानीय लोगों को रोजगार के नए अवसर मिले।
5. **पर्यावरणीय संतुलन:** बाँध के जलाशय और आसपास हरियाली बढ़ने से क्षेत्र का स्थानीय जलवायु संतुलित हुआ है और जैव विविधता में भी वृद्धि हुई है।
6. **क्षेत्रीय विकास:** बाँध बनने के बाद क्षेत्र में सड़क, बिजली, संचार और अन्य आधारभूत सुविधाओं का विकास हुआ, जिससे स्थानीय लोगों का जीवन स्तर बेहतर हुआ।

पतरातु बांध का मानव जीवन पर नकारात्मक प्रभाव

1. **विस्थापन की समस्या:** बाँध के निर्माण के समय कई गाँवों के लोगों को अपने घर और जमीन छोड़कर अन्य स्थानों पर बसना पड़ा। इससे सामाजिक और आर्थिक समस्याएँ उत्पन्न हुईं।
2. **कृषि भूमि का डूब क्षेत्र में आना:** बाँध बनने से कुछ उपजाऊ कृषि भूमि जलाशय में डूब गई, जिससे किसानों को भूमि की हानि हुई।
3. **पर्यावरणीय प्रभाव:** बाँध के निर्माण के कारण कुछ प्राकृतिक वन क्षेत्र जलमग्न हो गए, स्थानीय वन्यजीवों के आवास प्रभावित हुए।
4. **जल प्रदूषण की समस्या:** पर्यटकों की बढ़ती संख्या के कारण कई बार प्लास्टिक और कचरे से जल प्रदूषण की समस्या उत्पन्न होती है।
5. **सामाजिक असमानता:** पर्यटन और विकास से होने वाले लाभ सभी लोगों तक समान रूप से नहीं पहुँचते, जिससे कुछ क्षेत्रों में आर्थिक असमानता भी देखी जाती है।

पतरातू बांध में पर्यटको की संख्या एवं वार्षिक आय वर्ष (2014–2025)

वर्ष	अनुमानित पर्यटको की संख्या (लगभग)	अनुमानित वार्षिक आय (रू. करोड.में)
2014	120000	85
2015	135000	95
2016	155000	115
2017	180000	135
2018	210000	160
2019	240000	190
2020	90000	65
2021	130000	100
2022	220000	175
2023	275000	225
2024	310000	270
2025	340000	300

(स्त्रोत: JTDC क्षेत्रीय पर्यटन रिपोर्ट)

पतरातू बांध टिकट की कीमत

1. पार्किंग शुल्क कार के लिए 50 रुपये, बाइक के लिए 20 रुपये।
2. प्रवेश शुल्क 20 रुपये प्रति व्यक्ति।
3. पैडल बोटिंग का समय सुबह 7 बजे से शाम 6 बजे तक।
4. एक बोटिंग का शुल्क 250 रुपये है, जिसमें 4 लोग एक साथ बैठकर बोटिंग कर सकते हैं।
5. अगर कोई वीडियोग्राफी या फोटो शूट करना है तो 500 रुपए किराया लिया जाएगा, जो गेट के पास किया जाता है।
6. सिकारा बोटिंग – 4 लोगों के लिए 600 रुपये।
7. स्टीमर बोटिंग – 4 लोगों के लिए 1000 रुपये।
8. प्री–वेडिंग के लिए बोट – एक घंटे के लिए 4000 रुपये।
9. सामान्य प्री–वेडिंग बोट एक घंटे के लिए 2000 रुपये।
10. साइकिल बोटिंग 2 लोगों के लिए 500 रुपये।

पतरातू बांध में पर्यटकों आकर्षित होने का कारण

1. **प्राकृतिक सौंदर्यः** पतरातू बाँध चारों ओर से पहाड़ियों और हरियाली से घिरा हुआ है। बाँध के जलाशय का विशाल जल क्षेत्र, नीला पानी और आसपास के जंगल मिलकर अत्यंत सुंदर दृश्य प्रस्तुत करते हैं। यह प्राकृतिक सौंदर्य पर्यटकों को आकर्षित करता है और उन्हें प्रकृति के निकट होने का अनुभव कराता है।
2. **पतरातू घाटी का मनोरम दृश्यः** पतरातू घाटी की घुमावदार सड़कें और ऊँचे–नीचे पहाड़ पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र हैं। घाटी से बाँध और झील का दृश्य अत्यंत मनोहारी दिखाई देता है, जहाँ लोग फोटो खींचना और दृश्यावलोकन करना पसंद करते हैं।
3. **नौका विहारः** पतरातू डैम में नौका विहार की सुविधा उपलब्ध है। पर्यटक नाव की सवारी करते हुए झील के शांत वातावरण का आनंद लेते हैं। यह गतिविधि विशेष रूप से परिवार और मित्रों के समूह के लिए आकर्षण का प्रमुख साधन है।
4. **पिकनिक स्थलः** यह स्थान पिकनिक के लिए भी बहुत प्रसिद्ध है। सर्दियों और छुट्टियों के समय बड़ी संख्या में लोग यहाँ परिवार और मित्रों के साथ पिकनिक मनाने आते हैं। हरियाली और खुला वातावरण इसे एक आदर्श पिकनिक स्थल बनाता है।
5. **फोटोग्राफी और प्राकृतिक दृश्यः** सूर्योदय और सूर्यास्त के समय बाँध का दृश्य अत्यंत आकर्षक हो जाता है। इस समय आकाश और पानी का रंग बदलता हुआ दिखाई देता है, जो फोटोग्राफी के शौकीनों को बहुत आकर्षित करता है।
6. **शांत और स्वच्छ वातावरणः** शहर के शोर–शराबे से दूर स्थित होने के कारण यहाँ का वातावरण शांत और स्वच्छ है। लोग यहाँ आकर मानसिक शांति और विश्राम का अनुभव करते हैं।
7. **पर्यटन सुविधाओं का विकासः** सरकार द्वारा यहाँ सड़क, पार्क, बैठने की व्यवस्था, भोजनालय तथा अन्य सुविधाओं का विकास किया गया है। इन सुविधाओं के कारण पर्यटकों को आरामदायक अनुभव मिलता है और –पर्यटन को बढ़ावा मिलता है।

निष्कर्ष

आज के आधुनिक समय में लोगों के मानसिक तनाव को दूर करने का सर्वोत्तम साधन पर्यटन है जो रामगढ़ जिला के पोना पर्वतधाम के मनोरम वादियों में प्रर्याप्त है।

प्रस्तुत शोध पत्र द्वारा रामगढ़ जिला में पतरातू डैम के पर्यटन विकास की संभावनाओं को झारखण्ड सरकार द्वारा पर्यटन नीति से उचित प्रबंधन कर क्षेत्र का विकास किया जा सकता है। पतरातू डैम में पर्यटन विकास के लिए भौगोलिक धार्मिक सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक भूमि का महत्व है जहाँ एक साथ पर्यटन की कई संभावनांए देखी जा रही है, इसके साथ–साथ लोगों को रोजगार तथा विदेशी मुद्रा प्राप्त करने कि असीम संभावनाऐं बन पाऐगी तथा इस क्षेत्र में रोजगार के नई–नई साधनों को अपनाया जा सकता है, हालांकि इस दिशा में पर्यटन विभाग प्रयासशील है। रामगढ़ जिले में इतनी अधिक पर्यटन स्थलों के बावजूद हमें ऐसी पर्यटन नीति बनाने की आवश्यकता है जिससे मानव जीवन का विकास संभव हो सके ।

प्रस्तुत शोध कार्य में विशेष रूप से ज्ञानार्जन, व्यवहारिक परिवर्तन, भावनात्मक विकास, सामाजिक परिवर्तन, सांस्कृतिक विकास तथा रोजगार के अवसरो को बताया गया है। रामगढ़ जिला के इन प्रभावों पर यदि ध्यान दिया जाए तो रामगढ़ जिला के पतरातू डैम में पर्यटन विकास ही नहीं पर्यटन उद्योग विकसित किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. कुमार, संजीव (2020) *झारखण्ड का सामान्य ज्ञान.* लूसेन्ट पब्लिकेशन, पटना।
2. बंसल, एस.चन्द्र (2019) *पर्यटन भूगोल एवं यात्रा–प्रबंधन.* एकेडमिक प्रेस, मेरठ।
3. शर्मा, एस.के. एवं एस.के. (2019) *झारखण्ड में पर्यटन एवं विकास.* राजेश पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
4. खत्री, हरीश कुमार (2018) *पर्यटन भूगोल.* कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल।
5. प्रसाद, के. एवं सरकार, पी. (2014) *टूरिज्म इन झारखण्ड.* राजेश पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
6. शर्मा, एस. आर. एवं शर्मा, एस. (2014) *पर्यटकों का प्रदेश झारखण्ड.* हजारीबाग, झारखण्ड।
7. पर्यटन विभाग, भारत सरकार।
8. पर्यटन विभाग, झारखण्ड सरकार।
9. रामगढ़ जिला हैंण्डबुक।
10. रामगढ़ जिला गजेटियर।
11. Census of India (2011) Government of India.
12. Bhatt, S.C. (2006) The district and Gazette of Jharkhand.
13. Prasad, N. (1973) Suraj Kund, Hottest Spring of Bihar, Bihar Information, Patna.

****